चुनौतियां आपको अपने बारे में उन चीजों को जानने का मौका देती हैं, जो आप कभी नहीं जानते
- सिसली टायसन

अमेरिकी अभिनेत्री

सीरिया और इराक में आईएस के कमजोर पड़ने के बाद इसमें शामिल होने गए लड़ाकों के लौटने की खबरें पहले से आ रही थीं और अब श्रीलंका में हुए भीषण हमले ने दक्षिण एशिया में आतंकवाद की चुनौती के एक खतरनाक पहलू को उजागर किया है।

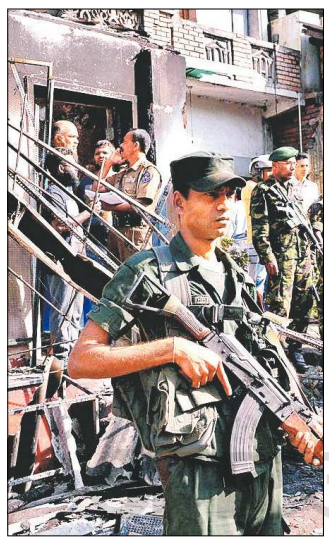

श्रीलंका में इस्लामिक स्टेट

ईस्टर के मौके पर श्रीलंका में कई चर्चों और होटलों में हुए भीषण आत्मघाती हमले में स्थानीय कट्टरपंथी गुटों के साथ ही इस्लामिक स्टेट (आईएस) की भूमिका ने इस द्वीपीय देश ही नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया में आतंकवाद की चुनौती के खतरनाक पहलू को उजागर किया है। सिलसिलेवार बम धमाकों के जरिये किए गए इस आतंकी हमले में मरने वालों की संख्या तीन सौ के आंकड़े को पार कर चुकी है और लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (लिट्टे) के 2009 में हुए सफाए के बाद यह वहां सबसे भीषण हमला है। श्रीलंका की सरकार और वहां की एजेंसियां घरेलू कट्टरपंथी गुट नेशनल तौहीद जमात (एनटीजे) के साथ ही विदेशी गुट पर पहले ही संदेह जता रही थी और आईएस के प्रोपेगेंडा 'अमाक' द्वारा जारी किए गए वीडियो के बाद इसे बल मिला है। इस हमले में मारे गए आतंकियों के बारे में जो ब्योरे आए हैं, वे इसलिए चौंकाते हैं, क्योंकि इनमें संपन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि के पढ़े-लिखे लड़के शामिल थे। यहां तक कि श्रीलंका के एक समय प्रतिष्ठित माने-जाने वाले मसाला कारोबारी मोहम्मद युसूफ इब्राहिम के दो बेटे भी इनमें शामिल थे, जिससे पता चलता है कि वहां कट्टरपंथी गुट ने किस तरह से पैठ बनाई है। गृहयुद्ध के लंबे दौर में श्रीलंका में नस्लीय हमले तो होते रहे हैं, लेकिन ऐसी धार्मिक कट्टरता नहीं देखी गई थी। आरंभिक जांच के आधार पर श्रीलंका के रक्षा मंत्री रूवान विजयवर्द्धने ने कहा है कि श्रीलंका में जो कुछ हुआ, वह न्यूजीलैंड के क्राइस्टचर्च में मस्जिदों पर हुए हमले के जवाब में हुआ है। हालांकि अनेक विशेषज्ञों का आकलन है कि न्यूजीलैंड में हमला 15 मार्च को हुआ था और श्रीलंका के हमले की भीषणता को देखकर लगता है कि इसे कई महीनों की तैयारी के बाद अंजाम दिया गया! वास्तव में पाकिस्तान, बांग्लादेश, भारत के साथ ही श्रीलंका और मालदीव से भी अनेक युवा इस्लामिक स्टेट से प्रभावित होकर सीरिया और इराक चले गए थे, लेकिन वहां इसके कमजोर पड़ने के बाद उनके लौटने की सूचनाएं लंबे समय से आ रही हैं। दरअसल यह हमला इस बात का संकेत है कि इस्लामिक स्टेट दक्षिण एशिया में जड़ें जमा रहा है, जिससे निपटने के लिए बेहतर तालमेल और सहयोग की जरूरत है। स्वाभाविक रूप से इसमें भारत की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

घर में ही घिरे इमरान

मंत्री पद पर विवादास्पद नियुक्तियों के लिए इमरान खान अगर बिलावल भुट्टो के निशाने पर हैं, तो ईरान में हुए हमले में पाक आतंकियों का हाथ होने की बात मानने के कारण भी उनकी आलोचना हो रही है।

मरिआना बाबर, पाकिस्तानी पत्रकार

एक क्षण के लिए ऐसा लगा, मानो पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) की दिवंगत अध्यक्ष बेनजीर भुट्टो नेता प्रतिपक्ष के रूप में नेशनल एसेंबली में सत्ता पक्ष की आलोचना कर रही हैं। लेकिन यह वह नहीं, बल्कि उनके इकलौते बेटे और पीपीपी के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो जरदारी थे, जिन्होंने संदिग्ध अतीत वाले लोगों को मंत्रिमंडल में शामिल करने के लिए पीटीआई सरकार पर हमला कर मृत पड़े निचले सदन में जान फूंक दी। अपने भाषण के दौरान वह अपनी मां की तरह बोल रहे थे, खासकर तब, जब सत्ता पक्ष के लोग उन्हे बोलने नहीं दे रहे थे, तब उनकी तरफ मुड़कर उन्होंने कहा, 'लोकतंत्र में सवाल पूछा ही जाएगा।'

प्रधानमंत्री चुने जाने से पहले इमरान खान संसद की बैठकों में शामिल होना पसंद नहीं करते थे। जब वह विपक्ष में थे, तब कभी-कभार ही निचले सदन में आते थे। उनके एक करीबी सहयोगी ने मुझे बताया था कि उन्हें संसद की कार्यवाही बहुत ऊबाऊ लगती है। सदन के नेता चुने जाने के बाद फिर इमरान खान सदन से दूर रहते हैं, और अब उनका बहाना है कि विपक्षी पार्टी उन्हें बोलने नहीं देती और प्रश्नों से तंग करने की उसकी आदत वह बर्दाश्त नहीं कर सकते।

इस हफ्ते बिलावल भुट्टो ने प्रधानमंत्री को 'भूतिया कर्मचारी' बताया, जो संसद में आए और सत्र में उपस्थित हुए बिना वेतन लेते हैं। लेकिन बिलावल का तीखा हमला प्रधानमंत्री की उस पसंद को लेकर है, जिसमें उन्होंने गैर निर्वाचित लोगों को सलाहकार बनाया है। उनमें से सभी पीपीपी, पीएमएल (एन) या सेवानिवृत्त जनरल परवेज मुशर्रफ की सरकार में मंत्री रह चुके हैं। मंत्रिमंडल में पीटीआई के सांसदों की संख्या बहुत कम है। इन गैर निर्वाचित सलाहकारों के साथ सबसे खतरनाक बात यह है कि ये संसद के प्रति जवाबदेह नहीं हैं, बल्कि उनके प्रति जवाबदेह हैं, जिन्होंने इन्हें नियुक्त किया है। प्रधानमंत्री ने भी अपना काम करने में विफल रहे मंत्रिमंडल के सदस्यों की जिम्मेदारी नहीं ली है। हां, भविष्य के लिए उन्होंने चेतावनी जरूर दी कि काम न करने वाले मंत्रियों को बर्खास्त कर दिया जाएगा।

अलबत्ता बिलावल ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि अगर किसी को अपने पद से हटना था, तो वह अक्षम और अयोग्य प्रधानमंत्री को हटना चाहिए था। बिलावल इमरान खान को इलेक्टेड (निर्वाचित) के बजाय सिलेक्टेड (चुने गए) प्रधानमंत्री कहकर यह संकेत देते हैं कि वह ताकतवर पाकिस्तानी सेना के कंधे पर चढ़कर सत्ता में आए हैं।

हाफिज शेख वित्त मंत्रालय में नए सलाहकार हैं, जो इसी पद पर आसिफ अली जरदारी की सरकार और बाद में सैन्य तानाशाह जनरल परवेज मुशर्रफ के मंत्रिमंडल में भी काम कर चुके हैं और वाशिंगटन के करीबी बताए जाते हैं। बिलावल ने प्रधानमंत्री से पूछा, 'क्या आपने वित्त मंत्री असद उमर को इसलिए बर्खास्त कर दिया, क्योंकि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित संगठनों के समर्थन से चुनाव लड़ा था? क्या आपने आतंकवादी और प्रतिबंधित संगठनों से संबंध रखने वाले सभी मंत्रियों को हटाए जाने की मेरी मांग मान ली है?' दरअसल चुनाव के दौरान पीटीआई के कई सदस्य, जिनमें मौजूदा राष्ट्रपति आरिफ अल्वी और पूर्व वित्त मंत्री असद उमर भी शामिल थे, वोट मांगने के लिए प्रतिबंधित जेहादी समूहों से मिले थे। बिलावल ने आगे कहा कि 'अगर सत्ता पक्ष के लोग सोचते हैं कि वे हमें अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल कर और दबाव डालकर चुप करा देंगे, तो ऐसा संभव नहीं है। जब जिया उल हक, अयूब खान और परवेज मुशर्रफ जैसे तानाशाह हमें नहीं रोक सके, तो यह कठपुतली सरकार हमारे सामने कुछ भी नहीं है।'

इमरान खान ने जो सबसे ज्यादा विवादास्पद नियुक्ति की है, वह गृह मंत्री के रूप में सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर एजाज शाह की है, जिन पर बेनजीर भुट्टो और अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल की हत्याओं के आरोप हैं। अंग्रेजी दैनिक *द न्यूज* ने भी एजाज शाह की नियुक्ति के लिए इमरान खान पर हमला बोला है। उसने अपने संपादकीय में लिखा है, 'एजाज शाह सबसे विवादास्पद हैं। शाह पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के विश्वस्त सहयोगी थे, वह इंटेलिजेंस ब्यूरो के महानिदेशक के रूप में काम कर चुके हैं, और उन पर कई तरह से राजनेताओं को धमकाने और जबर्दस्ती करने का आरोप है। बेनजीर भुट्टो ने भी उन पर अपनी हत्या की साजिश रचने का आरोप लगाया था।'

बिलावल भुट्टो ने सत्ता पक्ष से सवाल किया कि 'आप दुनिया को क्या संदेश देना चाहते हैं? क्या आप दुनिया को यह बताना चाहते हैं कि हमारे मंत्रिमंडल में आतंकवादी और उनके सूत्रधार शामिल हैं?'

नेशनल एसेंबली में इमरान खान को इसके लिए भी आलोचना सुननी पड़ी कि अपने हाल के ईरान दौरे में उन्होंने तेहरान को बताया कि उनके यहां आतंकी हमलों के लिए पाकिस्तान स्थित आतंकवादी जिम्मेदार थे। हालांकि कुछ लोगों ने प्रधानमंत्री की इस स्वीकारोक्ति का स्वागत भी किया है। इस क्षेत्र के हर देश में आतंकवादी समूह हैं, जिनका इस्तेमाल दूसरे देश के खिलाफ किया जाता है। अगर ईरान और पाकिस्तान इन आतंकी समूहों के खिलाफ मिलकर काम कर सकते हैं, तो निश्चित रूप से पाकिस्तान, अफगानिस्तान और भारत भी सहयोग कर सकते हैं। काबुल के सहयोग से पाक तालिबान निरंतर पाकिस्तान में हमले करते हैं।

कुछ टिप्पणियों में इमरान खान द्वारा ईरान में दिए गए बयान को गलत ढंग से उद्धृत किया गया, पर मीडिया के लिए उनकी नई विशेष सहायक फिरदौस आशिक आवान ने जियो टीवी को बताया कि यह स्वीकार करना पाकिस्तान की नीति है कि उसके यहां आतंकी समूह रहते हैं और उन्हें खत्म किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सभी हितसाधकों ने मिलकर मौजूदा आतंकी समूहों को खत्म करने का फैसला किया है। उन्होंने संकेत दिया कि इमरान खान के इस बयान से सेना भी सहमत है।

पर नवाज शरीफ की बेटी मरियम नवाज शरीफ ने कहा कि 'विदेशी धरती पर विदेशी नेताओं के साथ बैठकर अपने ही देश को बदनाम करने का ऐसा उदाहरण राष्ट्रीय और कूटनीतिक इतिहास में नहीं मिलता। कल्पना कीजिए कि ईरानी नेतृत्व क्या सोच रहा होगा!'

अंतर्ध्वनि

>> शिवप्रसाद सिंह

रस उसी में होगा, जो अपने कार्यों से आनंद, चेतना और प्रकाश दे

जब प्राचीन भारत की ओर आंख उठाकर देखते हैं, तो एक अजीब किस्म का करिश्मा सब ओर अठखेलियां खेलता हुआ दिखाई पड़ता है। हिंदुस्तान जब समृद्ध था, तभी उसके यहां अध्यात्म भी अपनी अंतिम चोटी पर पहुंचा। हिंदुस्तान में जब वेदांत सूत्र लिखा गया, तब कामसूत्र रचा जा चुका था। हिंदुस्तान में जब तुलसी और सूर पैदा हुए, तब भुवनेश्वर और खजुराहो के मंदिर बन चुके थे। हिंदुस्तानी अध्यात्म ने कभी भी भौतिक आनंद की गहराइयों में उतरने से हिंदुस्तानी को रोका नहीं।

क्योंकि हिंदुस्तान की आत्मा की यह विशेषता है कि वह जीवन के खूब जरूरी दो अतिवादी छोरों के बीच अच्छा समन्वय कर लेती है। हिंदुस्तानी न सिर्फ भौतिक मधु रस को लगातार इकट्ठा करता रहा, बल्कि उसे उपभोग में लाने के सूक्ष्म तरीके खोजता रहा। रस आखिर है क्या? चैतन्य का चमत्कार ही तो। कहते हैं कि परब्रह्म जो अद्वितीय, चैतन्यस्वरूप और ज्योतिर्मय है, उसका सहज आनंद, चमत्कार और प्रकाश ही एकाकार होकर रस बनता है। यानी रस उसी में होगा, जो अपने कार्यों से आनंद, चेतना और प्रकाश दे। क्या ये गुण ही इस बात का प्रमाण नहीं हैं कि हमारे अंदर इन तीनों ही चीजों का परम अभाव हो गया है। यह कहना कि विदेशी संस्कृतियों के संपर्क से ऐसा हुआ, वस्तु को गलत कोण से प्रस्तुत करना हो जाएगा। संस्कृति कोई बुरी नहीं होती। संस्कृतियां कौमों की अपनी आत्मा का आनंद, चमत्कार और प्रकाश होती हैं, जैसी जिस कौम की आत्मा होगी, वैसी ही उसकी संस्कृति होगी। इसलिए हमें दूसरों की संस्कृतियों को कोसने की आदत छोड़ देनी चाहिए। असल में दूसरी संस्कृतियों के संपर्क से शक्तिशाली संस्कृति और भी समृद्ध होती है, भारत की संस्कृति हमेशा ही सशक्त रही है, अब भी है, इसलिए वह समृद्ध ही हुई।

-सुप्रसिद्ध हिंदी उपन्यासकार

मंजिलें और भी हैं

>> वंदना शाह

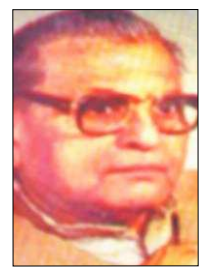

खुद पीड़ित होकर दूसरी पीड़िताओं की लड़ाई लड़ती हूं

मैं मुंबई की रहने वाली हूं। मेरी कॉलेज की पढ़ाई पूरी ही हुई थी कि पहले पिता और फिर मां का देहांत हो गया। मैं मनोविज्ञान में एम.ए. कर कुछ बनना चाहती थी। लेकिन जिन रिश्तेदारों ने मेरी देखभाल की जिम्मेदारी ली, वे जल्दी से जल्दी मेरी शादी करा देना चाहते थे। मैं कुछ समझ पाती, इससे पहले ही मेरी शादी करा दी गई। ससुराल में आकर मैं खुश थी। पर जल्दी ही मुझे पता चला कि ससुराल वाले मुझसे खुश नहीं हैं। चूंकि मेरे माता-पिता नहीं थे, इसलिए ससुराल में कोई मेरा पक्ष रखने वाला भी नहीं था। नतीजतन आए दिन ससुराल वाले मुझसे बदसुलूकी करते। लगभग बीस साल पहले मेरे ससुराल वालों ने आधी रात को मुझे घर से निकाल दिया था। तब मेरे पास एक जोड़ी कपड़े के अलावा कुछ भी नहीं था। मैं मायके आ गई, पर वहां मेरे रिश्तेदारों का कब्जा था। वे नहीं चाहते थे कि मैं वहां रहूं। मैंने ससुराल वालों पर मुकदमा कर दिया था। तब मुझे लगभग रोज ही अदालत के चक्कर काटने पड़ते थे। पर मेरे रिश्तेदार मेरी मदद करना तो दूर, वे मेरे साथ अदालत तक जाने को तैयार नहीं थे।

मुझे संतोष है कि मेरे और मेरी संस्था के प्रयास से तलाक के मामले में समाज की सोच बदल रही है।

मैं अदालत के चक्कर में उलझी ही हुई थी कि मेरे पति ने अदालत में तलाक की याचिका डाल दी। उस दौरान मैं बहुत परेशान थी और किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ रही थी, जो मेरी पीड़ा सुने और समझे। अदालत परिसर में ही मुझे अपनी जैसी कुछ महिलाएं दिखती थीं, जो मेरी ही तरह पीड़ित थीं। मैंने उन महिलाओं का समूह बनाया, जिसका नाम रखा '360 डिग्रीज बैक टू लाइफ।' इस समूह में ज्यादातर महिलाएं युवा थीं। तमाम महिलाओं की पीड़ा एक जैसी थीं। वे सब ससुराल से उत्पीड़ित थीं और मायके में भी उनकी आवाज बनने वाले नहीं थे। तमाम महिलाएं एक दूसरे से अपनी पीड़ा साझा करती थीं। उसी समय मैंने लॉ की पढ़ाई करने के बारे में सोचा, ताकि वकील बनकर मेरी जैसी महिलाओं की समस्याएं सुलझाऊं। लॉ की पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं वकील बन गई। चूंकि मुझमें इस क्षेत्र में कुछ करने का जज्बा था, इसलिए आज महिला मामलों में मुझे सफल वकीलों में गिना जाता है।

मैं सिर्फ पीड़ित महिलाओं को न्याय दिलाने का ही काम नहीं करती, बल्कि मेरा समूह सबसे पहले अदालत परिसर में आने वाली इस तरह की हर महिला की काउंसिलिंग करता है। इस दौरान पीड़ित महिला को हौसला दिलाने के अलावा हमारे समूह की दूसरी महिलाओं से बातचीत भी कराई जाती है। मेरी संस्था से जुड़े लोग पीड़ित महिलाओं की ससुराल से संपर्क कर समझौते की संभावनाएं तलाशते हैं। मैं हर महिला की गरिमा बनाए रखने के पक्ष में हूं, चाहे वह पीड़ित हो या नहीं। हमारे समाज में उत्पीड़ित या ससुराल से निकाल दी गई महिलाओं के बारे में कोई अच्छी राय नहीं है। मैं अपनी संस्था के जरिये इसी धारणा को बदलने के अभियान में लगी हूं। जब समझौते की तमाम कोशिशें विफल हो जाती हैं, तब हम तलाक का विकल्प अपनाती हैं।

पीड़ित महिलाओं को बताया जाता है कि तलाकशुदा महिलाएं समाज पर बोझ नहीं हैं, बल्कि वे भी आत्मनिर्भर होकर सामान्य जीवन जी सकती हैं। पिछले एक दशक में मैंने दस हजार से अधिक लोगों की काउंसिलिंग की है, जिनमें महिलाओं की संख्या अधिक है। मुझे इस बात का संतोष है कि मेरे और मेरी संस्था के प्रयास से तलाक के मामले में समाज की सोच बदल रही है। महिलाओं की गरिमा की लड़ाई मैं पूरी उम्र लड़ती रहूंगी।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

नहीं बदली गौशालाओं की हालत

पशुओं की न जुबान होती है, न ही उनके पास वोट है। जुबान होती, तो उनकी व्यथा का विलाप बहरे कानों को भी विचलित करता। अगर वोट होता, तब तो उनके कई 'रक्षकों' की जमानतें जब्त हो जातीं।

सुभाषिनी सहगल अली

पांच साल पहले एक नई तरह की सरकार बनी थी। चुनाव जीतने के लिए आज के शासक दल ने कई वादे किए थे, जिनको लेकर चुनावी कोलाहल के बावजूद काफी चर्चा है। महिलाओं का 33 फीसदी आरक्षण कहां गया? देश की राजधानी 'बलात्कार की राजधानी' कैसे बन गई, जहां हर चार घंटे में एक बलात्कार होता है? नोटबंदी अकेले पचास लाख नौकरियां कैसे खा गई? ये सारे सवाल तो उठ ही रहे हैं, लेकिन उनका क्या, जिनसे वादे तो बहुत हुए थे, पर जो मूक हैं, सवाल नहीं पूछ सकते, जो वोट नहीं डाल सकते? मूक और बिना वोट की गाय को आश्वासन तो बहुत दिए गए थे कि उनकी हत्या बंद कर दी जाएगी। उनके लिए रहने और खाने की अच्छी व्यवस्था की जाएगी। गो-मूत्र और गोबर की जादुई उपलब्धियों पर शोध संस्थान स्थापित किए जाएंगे। पर गाय, उसके परिवार के अन्य पशु, उसके पालक और उस पर आश्रित लाखों लोगों के लिए पिछले पांच वर्ष काफी कष्टदायक रहे हैं। शासक दल द्वारा शासित रहे प्रदेशों से कुछ उदाहरण इस बात की पुष्टि करेंगे।

20 अगस्त, 2017 को छत्तीसगढ़ के दुर्ग से खबर आई कि तीन गौशालाओं में सैकड़ों गायें मर गईं। इनके मालिक भाजपा के जमुई नगर पंचायत के उपाध्यक्ष हरीश वर्मा हैं। जब एक संवाददाता वहां पहुंचा, तो उसे 30 मृत गायें जमीन पर दिखीं। गौशालाओं के अंदर की गंदगी और बदबू बर्दाश्त के बाहर थी। भूखी गाय की पसलियां दिख रही थी। गौशालाओं के पास खड़े ट्रैक्टरों में भी गाय के शव थे।

गुजरात में 2018 के मई महीने में बनासकांठा जिले के गौशालाओं के निरीक्षकों ने सैकड़ों गाय यह कहकर खोल दी कि सरकार की तरफ से जिस मदद का आश्वासन दिया गया था, वह प्राप्त नहीं हुई थी। केवल एक गौशाला (राजपुर पिंजरापोल) में आठ हजार गाय थीं। पूरे जिले के 97 गौशालाओं में 55,000 गाय और गोवंश थे। संचालकों का कहना था कि नोटबंदी के बाद लोगों ने मदद देनी बंद कर दी और सस्ती दर पर सरकार से मिलने वाला चारा इतना घटिया था कि उसे जानवर खाने से इनकार कर रहे थे।

इसी महीने सूचना के अधिकार के तहत पूछे गए सवाल पर बताया गया है कि केवल 2015 और 2018 के बीच भोपाल के 28 सरकारी मदद पाने वाले गौशालाओं में 3,826 गाय मर गईं।

उत्तर प्रदेश के रहने वाले, सेवानिवृत आईएएस अधिकारी अभय शुक्ल ने फरवरी, 2019 में प्रदेश में लागू की गई 'गौ नीतियों' से उत्पन्न समस्याओं और पीड़ा का उल्लेख किया है। उन्होंने सरकारी आंकड़ों के आधार पर अनुमान लगाया कि हर साल 1.2 करोड़ पशु अनुत्पादक हो जाते हैं। पहले ऐसे बैल, बछड़े और दूध न देने वाली भैंसे, बूचड़खानों और चमड़े के कारखानों के काम आते थे। इससे किसानों को काफी राहत मिलती थी, लेकिन अब यह बंद हो गया है। मांस व्यापार से जुड़ी लाखों नौकरियां समाप्त हो गईं।

जाहिर है कि न तो किसान इन पशुओं का भार वहन कर सकता है और न ही सरकार। इसीलिए ऐसे उपाय तलाश किए जा रहे हैं, जो बहुत ही क्रूर और अमानवीय हैं। उत्तर प्रदेश (और अन्य इलाकों में) के शहरों और देहात में आवारा पशुओं की भरमार है। वे भूखे रहते हैं, धक्के और मार खाते हैं, रात को वाहनों की टक्कर से घायल होते हैं, मरते हैं। जब किसान आंदोलन करते हैं या शहरी जनता हल्ला मचाती है, तो पशुओं को सरकारी स्कूलों में बंद कर दिया जाता है। लेकिन ये बंद पशु खाएंगे क्या? इस पर चुप्पी है। पशुओं की न जुबान होती है, न ही उनके पास वोट है। जुबान होती, तो उनकी व्यथा का विलाप बहरे कानों को भी विचलित करता। अगर वोट होता, तब तो उनके कई 'रक्षकों' की जमानतें जब्त हो जाती हैं।

-लेखिका माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य हैं

खुली खिड़की

दुनिया के विभिन्न देशों में शोधकर्ता

हाल के वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में शोध के प्रति आकर्षण बढ़ा है। शोधार्थियों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। विश्व में प्रति हजार आबादी पर सबसे ज्यादा शोधकर्ता डेनमार्क में हैं।

दीप जलाकर देखो

सत्संग

तीर्थंकर महावीर से एक दिन एक श्रद्धालु ने पूछा, 'भगवन्, मैं सभी व्रतों का यथासंभव पालन करता हूं। अर्जित धन का एक अंश दान करता हूं, उपवास भी करता हूं। किंतु कभी-कभी ऐसा लगता है कि जीवन व्यर्थ जा रहा है। मन की शांति के लिए क्या करना चाहिए?' यह सुनकर महावीर ने उसी से प्रश्न किया, 'क्या केवल धन के दान को ही सेवा मानकर संतोष कर लेते हो या कभी समय निकालकर अपने हाथों से भी किसी की सेवा करते हो?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'धनार्जन तथा पारिवारिक कार्यों से फुरसत नहीं मिलती, इसलिए किसी की सेवा नहीं कर पाता।' महावीर ने कहा, 'अपने हाथों से सेवा करने, अंधेरे को दूर करने के लिए दीपक जलाने से जो संतोष मिलता है, वह केवल धन दे देने मात्र से कदापि नहीं मिल सकता। दूसरों को अपने हाथों से सुख देने वालों को ही सच्चा संतोष मिलता है। अंधेरे में भटक रहे किसी व्यक्ति को दीपक की रोशनी में रास्ता दिखाकर देखो, तुम्हें स्वयं दिव्य प्रकाश और आनंद की अनुभूति होने लगेगी।' एक अन्य जिज्ञासु ने महावीर से पूछा, 'जैन धर्म का सार क्या है?' महावीर कहते हैं, 'जो तुम अपने लिए चाहते हो, वह दूसरों के लिए भी चाहो और जो अपने लिए नहीं चाहते, वह दूसरों के साथ भी न करो, यह जिन शासन है यानी जैन धर्म का सार।' तीर्थंकर महावीर जीवन के अंतिम क्षणों तक सद्विचारों के प्रकाश से सभी को आलोकित करते रहे।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

मेमना, घंटी और भेड़िया

यह कहानी एक मेमने की है, जो अपनी चतुराई से भेड़िये के चंगुल से बच निकला।

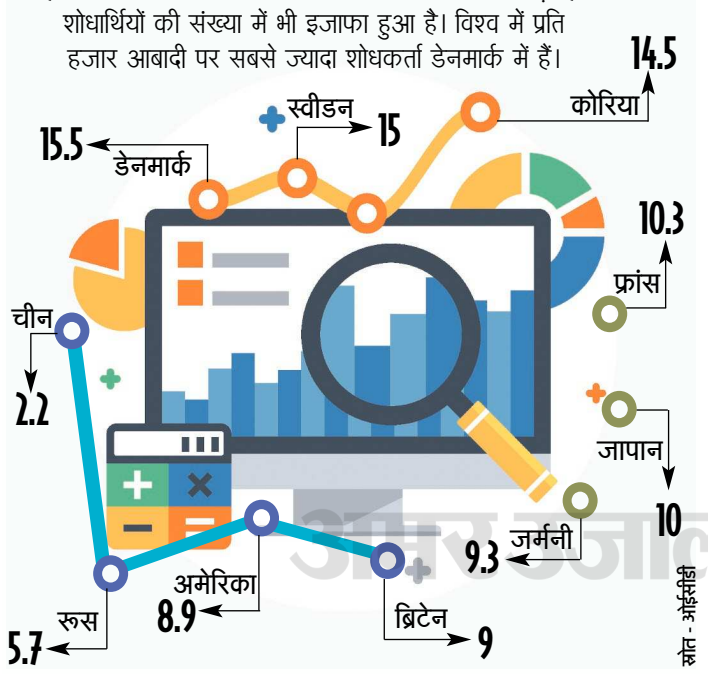

एक मेमना अपने मां-बाप के साथ अपने घर के पास एक बाग में घास चर रहा था। उसने देखा, दूर एक जगह पर ज्यादा हरी और ताजा घास उगी हुई थी। घास के लालच में मेमना अपने परिजनों से दूर चला गया। धीरे-धीरे समय बीतता गया और मेमना और दूर जाता गया। शाम गहराने लगी। उसके परिजन घर लौट गए। लेकिन मेमना अब भी घास खाने में मस्त था। एक भेड़िया बड़ी देर से मेमने पर नजर गड़ाए बैठा था। मौका मिलते ही उसने हमला कर दिया। भेड़िये को देख वह मेमना डरकर जमीन पर लेट गया। भेड़िया बोला, मैं तुम्हें खा जाऊंगा। मेमने ने कहा, मेरे पेट में ढेर सारी घास भरी है। अगर आप मुझे अभी खाएंगे, तो आपका स्वाद खराब हो जाएगा। हम थोड़ी देर यहीं बैठ जाते हैं। मेरे पेट में जो घास है, वह पच जाएगी। फिर आप मुझे आराम से स्वाद लेकर खा लीजिएगा। भेड़िया मान गया। उधर मेमना दिमाग दौड़ा रहा था कि वह ऐसा क्या करे कि भेड़िये के चंगुल से बच जाए। थोड़ी देर बाद उसने भेड़िये से कहा, मैं थोड़ी देर नाच लेता हूं। इससे आपका मनोरंजन होगा और मेरा खाना भी जल्दी पच जाएगा। भेड़िया मान गया। पर संगीत के बिना नाच में कहां मजा आता है! मेमने ने भेड़िये से कहा, अगर आप मेरे गले की घंटी उतार कर उसे जोर-जोर से बजाएं, तो ज्यादा मजा आएगा। अब भेड़िया जोर-जोर से घंटी बजाने लगा। उधर घंटी बजते ही मेमने के मालिक को समझ में आ गया कि उसका मेमना किसी मुसीबत में फंसा है। उसने अपने सारे कुत्ते मेमने को ढूंढने के लिए छोड़ दिए। कुत्तों के झुंड को देखते ही भेड़िया वहां से भाग गया। इस तरह मेमना अपनी सूझ-बूझ के कारण भेड़िये को चकमा देने में कामयाब रहा और सकुशल घर लौट आया। मेमने के घर पहुंचने पर उसका खूब सम्मान किया गया।

अपने काम में सफल होने के लिए सही समय पर अक्ल का इस्तेमाल जरूरी है।